अनुभव

7

सीखना और कला

लक्ष्मीरानी 'चंदेल'*

सक्रियता बच्चों का नैसर्गिक स्वभाव है। कक्षा में कलात्मक गतिविधियों द्वारा कुछ करके सीखने का अवसर उन्हें दिया जाए तो सीखना उनके लिए सहज हो जाता है, सीखने में उन्हें आनंद आता है और उनकी सृजनात्मक क्षमता को भी उभर कर सबके सामने आने का अवसर मिलता है। बस आवश्यकता है शिक्षक द्वारा स्नेहिल मार्गदर्शन की।

एक बार प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली की ओर से जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान, नरेंद्र नगर, देहरादून में जाने का सुअवसर मिला। वहाँ आँगनवाड़ी शिक्षिकाओं के लिए "पूर्व प्रारंभिक शिशु शिक्षा एवं देखभाल" (ECCE) का प्रशिक्षण कार्यक्रम चल रहा था। वहाँ मैंने आंगनवाड़ी शिक्षिकाओं के साथ मिलकर कुछ सृजनात्मक कार्य किए जैसे–

1. रंगों और हथेली की सहायता से मोर बनाना।
2. मोमबत्ती के धुएँ से गणेश जी बनाना।
3. अनुपयोगी सामान (Waste Material) जैसे– माचिस की जली हुई तीलियों, पुराने बटन, बेकार गोटे और पुराने कार्डो द्वारा सजावट का सामान तैयार करना।

उपरोक्त का विवरण निम्नवत है–

रंगों और हथेली की सहायता से मोर बनाना

बनाने के लिए सामग्री–

1. बड़ी प्लेट (जिसमें पूरी हथेली आ जाए)।
2. सफेद चार्टपेपर
3. पानी वाले रंग (हरा, नीला)
4. पेंसिल, रबड़, स्केल
5. स्केचपेन (काला)
6. फेवीकॉल

बनाने की विधि–चार्टपेपर पर पेंसिल की सहायता से मोर का चित्र बनाएँ। इसके बाद हरे, और नीले रंगों को एक-के-बाद एक प्लेट

**कनिष्ट परियोजना अध्येता*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंदो मार्ग, नयी दिल्ली-110016

में डालकर हथेली को पूरा भिगो कर चार्टपेपर पर मोर के पंखों की तरह छापे लगाएँ। यह प्रक्रिया दोनों रंगों में हथेली को भिगोते हुए दोहराएँ। उसके बाद काले स्केचपेन द्वारा मोर की आँखें, शरीर, पैर बनाएँ।

मोमबत्ती के धुएँ से गणेश जी बनाना

बनाने की सामग्री–

1. मोमबत्ती
2. चार्टपेपर (सफेद)
3. माउंट बोर्ड
4. रबड़
5. किनारे पर लगाने के लिए गोटा
6. शीशा या रंगीन टेप
7. कैंची
8. फेवीकॉल
9. सेलीफोन पेपर (कवर करने के लिए)।

बनाने की विधि–चार्टपेपर लेकर उसके पीछे माउंट बोर्ड चिपकाएँ। उसके बाद मोमबत्ती जलाएँ और धीरे-धीरे चार्टपेपर पर मोमबत्ती का धुआँ लेते रहे। यह प्रक्रिया तब तक करें जब तक कि पूरा पेपर धुएँ से भर न जाए। ध्यान रहे इसे मोमबत्ती से थोड़ा ऊपर रखें ताकि पेपर जल न जाए। उसके बाद रबड़ की सहायता से गणेश जी का चित्र बनाएँ। अंत में इसे सेलोफोन पेपर से पूरा ढँक दें जिससे कि धुआँ बार-बार हाथ लगने से हट ना जाए। इसके बाद इसे कक्षा में लगाएँ और बच्चों को दिखाएँ।

इस कार्य में शिक्षिकाओं ने अत्यधिक रूचि दिखायी। इसके बाद शिक्षिकाओं से चर्चा की गयी कि इनका उपयोग करते हुए बच्चों से क्या-क्या बातें की जा सकती हैं। इस चर्चा में भी शिक्षिकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। चर्चा में उभर कर आयी बातें निम्नवत् हैं–

- चित्र में कौन-सा पक्षी दिख रहा है?
- उस पक्षी का रंग कैसा है?
- उस पक्षी की चोंच कैसी है?
- पक्षी की आँखें कैसी हैं?
- यह पक्षी कहाँ रहता है?

यह भी चर्चा की गई कि इस चित्र की सहायता से बच्चों को यह जानकारी दी जा सकती है कि मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है। इस प्रकार बच्चों के साथ हुई बातचीत से उन्हें मोर के विषय में जानकारी होगी। विभिन्न रंगों का ज्ञान होगा, उनमें सुनने और बोलने के कौशल का विकास होगा। बच्चों से मोर तथा अन्य

पशु-पक्षियों के चित्र बनवाए जा सकते हैं। चित्र बनाने में उन्हें बहुत आनंद आएगा।

- गणेश जी के चित्र को दिखाकर बच्चों से बातचीत की जा सकती है–
  - यह कौन-से भगवान का चित्र है?
  - इनकी पूजा कब की जाती है?
  - इनके और कौन-से नाम हैं?
  - गणेश जी को क्या भोग लगाया जाता है?

इसके साथ ही बातचीत के दौरान बच्चों से गणेश चतुर्थी तथा दीपावली के त्योहार पर बातचीत की जा सकती है। बच्चों की सहायता से इसी प्रकार से अन्य चित्र बनवाए जा सकते हैं। ध्यान रहे कि चित्र बनाते समय बच्चों के साथ रहें तथा अपने मार्गदर्शन में चित्र बनवाएँ ताकि जली मोमबत्ती से किसी प्रकार की दुर्घटना न हो।

उपरोक्त सृजनात्मक कार्यों से न केवल बच्चों की विद्यालय में रूचि जाग्रत की जा सकती है, बल्कि उनमें निहित सृजनात्मकता को भी उभरने का अवसर मिलता है। इन कार्यों को समूह में करवाने से बच्चों में परस्पर मिलकर कार्य करने की प्रवृत्ति का भी विकास होता है। कुछ करके सीखने की प्रक्रिया उन्हें आनंद की अनुभूति देने के साथ उनमें आत्मविश्वास भी विकसित करती है। इस प्रकार ऐसी क्रियाएँ बच्चों के सर्वांगीण विकास का अच्छा माध्यम हैं।